जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

राष्ट्रदूत

epaper.rashtradoot.com

कोटा

Rashtradoot

फोनः- 2386031, 2386032 फैक्सः- 0744-2386033 वर्षः 47 संख्याः 221 प्रभात कोटा, बुधवार 25 मई, 2022 कोटा/24/2012-14 पृष्ठ 8 मूल्य 1.20 रु.

विश्व की सर्वाधिक संकटग्रस्त समुद्री स्तनपायी प्रजाति विलुप्ति के कगार पर है। नुकीली नाक वाली, डॉल्फिन से मिलती जुलती ''वकीटा पॉरपस'' की आबादी घटकर केवल दस रह गई है। मैक्सिको में इसे नैशनल ट्रैज़र माना जाता है, जहाँ ये गल्फ ऑफ कैलिफोर्निया के ऊपरी भाग में मिलती हैं। इन स्तनपायियों को ''लिटल सी काओ'' भी कहते हैं। सबसे पहले सन् 1978 में इन्टरनैशनल यूनियन ऑफ कंज़र्वेशन नेचर (आई.यू.सी.एन.) ने इस मछली को अपनी रैड लिस्ट में ''वल्नरेबल'' वर्ग में रखा था लेकिन अब इनका अस्तित्व समाप्त होने के कगार पर है। तथापि, शोधकर्ताओं की एक अन्तर्राष्ट्रीय टीम का मानना है कि, अभी भी बहुत देर नहीं हुई है, इन्हें बचाया जा सकता है। ''साइन्स'' जर्नल में इसी माह प्रकाशित एक अध्ययन में कहा गया है कि, इतनी कम आबादी के बावजूद वकीटा में अन्तर्प्रजनन के कारण होने वाले हानिकारक म्यूटेशन्स का खतरा न्यूनतम है। पिछले एक दशक में बड़ी समुद्री मछली, टोटोबा का अवैध व्यापार तेजी से बढ़ने के कारण वकीटा की संख्या 576 से घटकर केवल दस रह गई है। चीन के ब्लैक मार्केट में, हजारों डॉलर में बिकने वाली ''टोटोबा'' मछली के लिए अवैध शिकारियों द्वारा डाले गए गिलनैट्स में वकीटा पॉरपस फंस जाती हैं। गल्फ ऑफ कैलिफोर्निया के उत्तरी सिरे पर मिलने वाली ये मछलियाँ 1958 में खोजी गई थीं। आवास क्षेत्र सीमित व छोटा होने के कारण दसियों हज़ार साल तक इनकी आबादी 5000 के नीचे रही। युनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया, सैन फ्रैंसिस्को में इवोल्यूश्नरी जैनेटिसिस्ट तथा शोध की सहलेखक, जैकलीन रॉबिन ने कहा, ''इनके उद्विकासी इतिहास में बहुत लंबे समय तक इनकी आबादी कम रहना तथा निम्न जैनेटिक डायवर्सिटी इनके पक्ष में है। आबादी में आई भारी गिरावट के बाद, पलटकर वापस आने की इनकी संभावनाएं बहुत अच्छी हैं। इनके अंदर छुपे हुए नुकसानदायक जैनेटिक वेरिएशन कम हैं जो कि भविष्य के अन्तर्प्रजनन में समस्या बन सकते हैं। शोधकर्ताओं की टीम का आकलन था कि, यदि वकीटा को संरक्षण दिया जाए तथा गिलनैट्स में फंसकर होने वाली मृत्यु पूरी तरह खत्म हो जाएं तो आधी सदी में इनकी विलुप्ति की संभावना केवल 6 प्रतिशत होगी। लेकिन यदि इन स्तनपायियों का, बहुत छोटे स्तर पर भी नैट्स में फंसना जारी रहा, तो विलुप्ति की संभावना बढ़ जाएगी।

'अगर ताईवान पर आक्रमण हुआ तो ''नाटो देश'' पर आक्रमण जैसी प्रतिक्रिया होगी'

अमेरिका ने चीन को चेतावनी दी जापान में आयोजित क्वाड सम्मेलन में

- जापान में आयोजित क्वाड सम्मेलन के दौरान चीन व रूस के लड़ाकू विमान जापान के नजदीक आसमान में फहरा रहे थे। जवाबी कार्यवाही में जापान ने भी अपने लड़ाकू विमान आसमान में उतारे।
- अब तक अमेरिका ''स्ट्रैटेजिक एम्बीग्विटी'' (अस्पष्ट भाषण) की नीति अपनाता आया है। अमेरिका ''नो कमैन्ट्स'' का रुख रखता था, जब भी यह पूछा जाता था कि, अगर ताइवान पर आक्रमण हुआ तो वह क्या करेगा।
- एक बार तो वर्तमान राष्ट्रपति बाइडन ने पूर्व तथा तत्कालीन राष्ट्रपति की कड़ी आलोचना तक की थी, जब राष्ट्रपति ट्रम्प ने इस ''स्ट्रैटेजिक एम्बीग्विटी'' का उल्लंघन किया था।
- जैसा कि, विदित है, जब राष्ट्रपति निक्सन ने चीन से कूटनीतिक संबंध स्थापित किये थे। तब से ताइवान से सीधे संबंध रखना बंद कर दिया।
- चीन ने दूसरी ओर स्पष्ट कहा है कि, ताईवान में किसी प्रकार हस्तक्षेप चीन के खिलाफ कार्यवाही मानी जायेगी।

-अंजन रॉय-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 24 मई। दुनिया में जहां कुछ बुरा होने की आशंका पहले ही बनी हुई है, वहीं अमेरिका के राष्ट्रपति जो बाइडन ने ताइवान के बारे में सोमवार को बयान देकर उसे और झकझोर दिया है।

राष्ट्रपति बनने के बाद एशिया के अपने पहले दौरे में बाइडन ने संकेत दिया कि यदि चीन ताइवान पर किसी तरह का हमला करता है तो अमेरिका सैन्य रूप से तुरन्त प्रभाव से उसमें कुद पड़ेगा। ताइवान पर चीन के हमले की सूरत ने उन्होंने अमेरिका की तरफ से वैसी ही भावना व्यक्त की जैसी कि नाटो देशों की होती है।

दरअसल, यदि रूस-यूक्रेन युद्ध ने यूरोपीय देशों में अस्थिरता ला दी है तो अब वही अनिश्चितता एवं संभावित अस्थिरता एशिया प्रशांत क्षेत्र में आने वाली है।

टोक्यो में जब मंगलवार को क्वाड नेता मीटिंग कर रहे थे, तब रूस और चीन के लड़ाकू विमान जापान के निकट आकाश में उड़ान भर रहे थे। इन विमानों ने मंगलवार को जापान के इलाके से लगते आसमान में संयुक्त युद्धाभ्यास किया। इसके जवाब में जापान ने भी अपनी शक्ति का प्रदर्शन करते हुए और चिंता प्रकट करते हुए अपने फाइटर जैट्स रवाना किए।

राष्ट्रपति बाइडन चार चुनिंदा देशों- यथा ऑस्ट्रेलिया, जापान, भारत और अमेरिका के नेताओं की एक शिखर बैठक में भाग लेने के लिए जापान दौरे पर थे। इन देशों के समूह को क्वाड कहा

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

राहुल फिर टारगेट

-डॉ. सतीश मिश्रा-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 24 मई। भाजपा राहुल गांधी की इंग्लैंड यात्रा की निंदा करने के लिए ज्यादा ही आगे बढ़ गई और लेबर पार्टी के पूर्व नेता जैरेमी कॉर्बिन के साथ हुई उनकी भेंट को लेकर एक विवाद खड़ा करने की कोशिश की, तो कांग्रेस ने भी तुरन्त ही एक फोटो ट्वीट कर दिया, जिसमें उक्त लेबर नेता, प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी से मुलाकात करते दिखाये गये है। कांग्रेस ने मीडिया से दोनों की पहचान जानने को कहा।

- राहुल इंग्लैंड में लेबर पार्टी के जैरेमी कॉर्बिन से मिले तो, जैरेमी कश्मीर समर्थक अवांछनीय व्यक्ति, पर, मोदी से मिले तो सब अवगुण गायब।

भाजपा नेता कपिल मिश्रा ने एक फोटोग्राफ ट्वीट करते हुए पूछा, ''राहुल गांधी जैरेमी कॉर्बिन (बीच में खड़े सज्जन) के साथ क्या कर रहे हैं? जैरेमी कॉर्बिन अपने भारत-विरोधी, हिन्दू विरोधी रुख के लिये बदनाम हैं।

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

'रणदीप सिंह सुरजेवाला भाजपा की राह की ओर चले?'

कहा जा रहा है कि, सुरजेवाला अमित शाह के सीधे सम्पर्क में हैं, तथा भाजपा उन्हें राज्यसभा के टिकट का आश्वासन दे चुकी है, पर सुरजेवाला मंत्री पद के इच्छुक हैं

-रेणु मित्तल-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 24 मई। दिल्ली के राजनैतिक हल्कों में आजकल यह अफवाह है कि ए.आई.सी.सी. मीडिया प्रमुख तथा पार्टी महासचिव रणदीप सिंह सुरजेवाला भाजपा नेता अमित शाह के सम्पर्क में हो सकते हैं। कहा तो यहाँ तक जा रहा है कि शाह के साथ उनकी मीटिंग तथा गहन चर्चा हो चुकी है।

अफवाह के अनुसार, भाजपा उन्हें एक राज्यसभा सीट देने के लिये तैयार है लेकिन सुरजेवाला मंत्री पद के लिये अड़े बताये जा रहे हैं।

बताया जाता है कि बात इसी बिन्दु पर अटक गई है।

एक नेता ने समझाया कि जहाँ सुरजेवाला भाजपा के लिये बहुत ज्यादा उपयोगी नहीं हैं क्योंकि उनमें चुनाव जीतने की क्षमता भी नहीं है तथा वे लगातार कई चुनाव हार चुके हैं, लेकिन वहीं, लेकिन वे केवल दिखाने के लिहाज से महत्वपूर्ण हैं क्योंकि वे राहुल तथा प्रियंका गांधी दोनों के नजदीक माने जाते हैं।

- भाजपा का मानना है, सुरजेवाला का कुछ चुनावी महत्व नहीं है पर, ''ऑप्टिक'' महत्व है क्योंकि, वे राहुल गांधी व प्रियंका गांधी के नज़दीक बताये जाते हैं।

इसके साथ ही, वे कांग्रेस से भी राज्यसभा सीट लेने के लिये प्रयासरत हैं। हरियाणा कांग्रेस के वरिष्ठ तथा मजबूत नेता भूपिन्दर सिंह हुडा ने सुरजेवाला के खिलाफ मोर्चा खोल दिया है तथा उन्होंने सुरजेवाला का पत्ता काटने के लिये अजय माकन को समर्थन करना शुरु कर दिया है। माकन भी राहुल गांधी के नवरत्नों में से एक हैं तथा वे भी राज्यसभा सीट के लिये पूरी तरह प्रयासरत है। वे राजस्थान के प्रभारी महासचिव हैं तथा इस कारण उन्हें राजस्थान से राज्यसभा का टिकट मिलना मुश्किल प्रतीत हो रहा है।

उदयपुर चिन्तन शिविर के दौरान, सुरजेवाला किसी पालतू जानवर की तरह अशोक गहलोत के पीछे लगे हुये थे तथा हर वक्त उनके साथ ही दिखाई पड़ रहे थे। चूँकि वे जानते हैं कि हुडा उन्हें हरियाणा से राज्यसभा का टिकट नहीं लेने देंगे, इसलिये उन्होंने यह आस लगा रखी है कि अशोक गहलोत राजस्थान से उनके नाम की सिफारिश कर देंगे।

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

टास्क फोर्स

-रेणु मित्तल-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 24 मई। कांग्रेस अध्यक्ष सोनिया गांधी द्वारा गठित टास्क फोर्स हरेक 72 घण्टे बाद अपनी मीटिंग करेगी और संभव हुआ तो हर 48 घंटे बाद। एक सीनियर नेता ने कहा कि यदि ऐसा हो सकता है तो यह वास्तव में शानदार हैं।

टास्क फोर्स का गठन आज सुबह ही किया गया और आज ए.आई.सी.सी. में ही इसकी पहली मीटिंग हुई जिसमें पी. चिदम्बरम, प्रियंका गांधी, जयराम रमेश, के.सी. वेणुगोपाल, सुरजेवाला, अजय माकन, मुकुल वासनिक व अन्य ने भाग लिया।

- पहली बैठक सोमवार की सुबह हुई, तथा 48 घण्टे में नहीं, तो हर 72 घण्टे में तो बैठक आयोजित होगी।

कमेटी विधानसभा से लेकर लोकसभा चुनावों तक चुनाव प्रबन्धन, मीडिया रणनीति आदि पर निर्णय करेगी। सर्वानुमति से कोई निर्णय नहीं किया जाएगा, बल्कि प्रत्येक सदस्य को एक विषय दिया जाएगा और उस पर राय तैयार करने के लिए सहायता के रूप में कुछ सदस्य दिए जाएंगे, फिर इसकी रिपोर्ट कांग्रेस अध्यक्ष को भेजी जाएगी।

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

तेलंगाना के मु.मंत्री नीतीश को विपक्ष का उम्मीदवार बनाने में जुटे हैं

- चंद्रशेखर राव मानते हैं कि, चाहे उन्हें, विपक्ष के उम्मीदवार को जिताने में सफलता नहीं मिले, पर इस कवायद से 2024 के संसदीय चुनावों तक विपक्ष जरूर एकजुट हो जाएगा।
- पर, अहम् सवाल हैं, क्या नीतीश कुमार, बलि का बकरा बनने को तैयार हैं।

-श्रीनन्द झा-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 24 मई। राजनैतिक हल्कों में एक बार फिर ये अटकलें जोरों पर हैं कि विपक्षी दल बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार को राष्ट्रपति पद के उम्मीदवार के रूप में खड़ा करेंगे।

चूँकि निर्वाचक मण्डल में 48.9 प्रतिशत वोट भाजपा के हैं, अतः वह अपने प्रत्याशी को आसानी से जिताने में सक्षम दिखाई दे रही है। क्षेत्रीय दल, तथा खासतौर से तेलंगाना के मुख्यमंत्री के चन्द्रशेखर राव, 2024 के लोकसभा चुनावों का पूर्वाभ्यास माने जा रहे राष्ट्रपति चुनाव में एकजुटता जुटता का प्रदर्शन करने के कमर कसे दिखाई दे रहे हैं।

जहाँ हारी हुई बाजी दिखाई दे रही इस चुनावी लड़ाई में बलि का बकरा बनने में बिहार के मुख्यमंत्री को ऐतराज हो सकता है, वहीं पक्की संभावना यह भी है कि वे भाजपा प्रत्याशी का समर्थन नहीं करेंगे, जैसा कि उन्होंने पहले किया था। इस बीच के.सी.आर. राष्ट्रपति पद के प्रत्याशी को लेकर सर्वसम्मति बनाने के विचार के साथ विपक्षी खेमें में विचार-विमर्श करने में लगे हुये हैं। हाल ही में, के.सी.आर. ने दिल्ली में, दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविन्द केजरीवाल के साथ मीटिंग की थी। इससे पूर्व, वे इस सम्बन्ध में समाजवादी पार्टी प्रमुख अखिलेश यादव के साथ भी चर्चा कर चुके हैं। 26 मई को, वेंगलुरू में पूर्व प्रधानमंत्री एच.डी. दैवेगौड़ा तथा जे.डी.एस. नेता एच.डी. कुमारास्वामी के साथ मीटिंग करेंगे। आशा की जा रही है कि इस माह के अन्तिम दिनों में वे कोलकाता जायेंगे तथा तृणमूल कांग्रेस प्रमुख एवं पश्चिम गाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी के साथ मीटिंग करेंगे तथा इसके बाद वे बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार तथा आर.जे.डी. नेता तेजस्वी यादव के साथ मीटिंग करेंगे। के.सी.आर., एन.सी.पी. प्रमुख शरद पवार, केरल के मुख्यमंत्री चिनारी विजयन तथा महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री उद्धव ठाकरे के साथ पहले ही मीटिंग कर चुके हैं। के.सी.आर. ने भी विपक्षी नेताओं के साथ मार्च में भी मीटिंग की थीं।

के.सी.आर. की ये पूरे देश की यात्राएं राष्ट्रपति चुनाव में मतदान के रूप में परिवत होंगे या नहीं, लेकिन तेलंगाना के मुख्यमंत्री यह उम्मीद तो बाँध ही सकते हैं कि वे कांग्रेस को विपक्षी दलों का अगुआ बनने से रोकने के लिये तीसरे मोर्चे के गठन के लिये जमीन तैयार कर रहे हैं। पिछले राष्ट्रपति चुनाव में, कांग्रेस ने राष्ट्रपति पद के लिये मीरा कुमार की उम्मीदवारी की घोषणा कर दी थी। टी.आर.एस. के सूत्रों ने कहा कि विपक्षी दल यह सुनिश्चित करें कि इस बार विपक्ष के उम्मीदवार के रूप में किसी गैर-कांग्रेस उम्मीदवार को खड़ा किया जाये।

चीफ जस्टिस सबीना

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 24 मई। हिमाचल प्रदेश हाईकोर्ट की वरिष्ठतम जज जस्टिस सबीना को चीफ जस्टिस मोहम्मद रफीक की सेवानिवृत्ति के बाद मंगलवार को हाईकोर्ट का चीफ जस्टिस नियुक्त कर दिया गया। यह जानकारी राष्ट्रपति भवन की एक विज्ञप्ति में दी गई।

- राष्ट्रपति भवन से प्राप्त विज्ञप्ति के अनुसार हिमाचल प्रदेश हाई कोर्ट की वरिष्ठतम जज जस्टिस सबीना को हिमाचल हाई कोर्ट का एक्टिव चीफ जस्टिस बनाया गया है।

इस बीच, सुप्रीम कोर्ट कोलीजियम ने इलाहबाद हाईकोर्ट के 10 अतिरिक्त न्यायाधीशों को इसी हाईकोर्ट में पदोन्नत कर स्थायी जज बनाए जाने की स्वीकृति दी है।

कांग्रेस ने बनाईं तीन महत्वपूर्ण कमेटियां, लेकिन राजनीतिक मामलों की कमेटी में एक भी नेता 50 साल से कम का नहीं है

तो क्या उदयपुर संकल्प शिविर में किया गया वायदा सिर्फ युवाओं को सपने दिखाने जैसा था

जयपुर, 24 मई (का.प्र.)। उदयपुर में आयोजित कांग्रेस के नव संकल्प शिविर के बाद कहा गया था कि पार्टी संगठन में 50 प्रतिशत पदों पर 50 वर्ष से कम उम्र के लोगों को लिया जाएगा, लेकिन कांग्रेस ने शिविर के संकल्पों को पूरा करने को लेकर जो कमेटियां गठित की हैं, उनमें सबसे महत्वपूर्ण पॉलीटिकल अफेयर्स कमेटी में राजस्थान से जितेंद्र सिंह को लिया गया है, जिनकी उम्र 50 वर्ष से ज्यादा है। वही कांग्रेस की भारत जोड़ो यात्रा को कॉर्डिनेट करने के लिए बनाई गई समिति में सचिन पायलट को सदस्य बनाया गया है, जिनकी उम्र 50 वर्ष से कम है। यानी कि कांग्रेस के राजनीतिक फैसलों में जहां जितेंद्र सिंह की भूमिका होगी, वही सड़कों पर संघर्ष करने के मामले में सचिन पायलट को आगे किया गया है।

दरअसल उदयपुर में लिए गए पार्टी के संकल्प के बिल्कुल विपरीत पॉलिटिकल अफेयर्स कमेटी में जितने भी नेताओं को शामिल किया गया है, उनमें एक की उम्र भी 50 वर्ष से कम नहीं है। यानी कि पार्टी की ओर से अब राजनीतिक मामले देखे जाएंगे, उन सब पर फैसला 50 साल से अधिक उम्र के या यूं कहें बुजुर्ग नेता करेंगे और युवाओं को जिस समिति में लिया गया है, वह समिति सिर्फ पार्टी की भारत जोड़ो यात्रा को कॉर्डिनेट करेगी। यानी कि सड़कों पर संघर्ष करने का काम तो युवाओं को दे दिया गया है, लेकिन पार्टी के महत्वपूर्ण फैसले लेने वालों में बुजुर्गों की ही भूमिका रहने वाली है। इन तीनों कमेटियों को देखने के बाद स्पष्ट नजर आता है कि आरपीएन सिंह और जितिन प्रसाद के कांग्रेस छोड़ने के बाद इन समितियों में जगह देकर यह जताया गया है कि कांग्रेस दबाव समूह के दबाव में आ चुकी है।

- राजनीतिक मामले देखेंगे जितेंद्र सिंह, भारत जोड़ो यात्रा करेंगे सचिन पायलट।

कहां जा रहा है कांग्रेस ने 2024 लोकसभा चुनाव की तैयारी शुरू करते हुए पार्टी की अंतरिम अध्यक्ष सोनिया गांधी ने इसके लिए टास्क फोर्स का गठन किया है। साथ ही 8 सदस्यीय पॉलिटिकल अफेयर्स कमेटी (पीएसी) भी बनाई है। कमेटी में सांसद राहुल गांधी, मल्लिकार्जुन खड़गे, गुलाम नबी आजाद, अम्बिका सोनी, दिग्विजय सिंह, आनन्द शर्मा, के.सी. वेणुगोपाल और जितेंद्र सिंह जैसे दिग्गज नेताओं को शामिल किया गया है। इन सभी नेताओं की उम्र 50 वर्ष से अधिक है और एक भी नेता 50 वर्ष से कम उम्र का इस महत्वपूर्ण समिति में शामिल नहीं किया गया है। टास्क फोर्स में पी चिदम्बरम, मुकुल वासनिक, जयराम रमेश, के.सी. वेणुगोपाल, अजय माकन, प्रियंका गांधी, रणदीप सुरजेवाला और सुनील कनगोलु का नाम शामिल किया गया है।

इसके अलावा कांग्रेस की ओर से कश्मीर से कन्याकुमारी तक 2 अक्टूबर से शुरू होने वाली भारत जोड़ो यात्रा के लिए सैन्ट्रल प्लानिंग ग्रुप फॉर भारत जाड़ो यात्रा बनाया गया है। इसमें दिग्विजय सिंह, सचिन पायलट, शशि थरूर, रंवीत सिंह बिट्टू, केजे जॉर्ज, जोथी मानी, प्रद्युत बोलदोलोई, जीतू पटवारी,

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

कुतुब मीनार फैसला नौ जुलाई को

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 24 मई। दिल्ली के एक अतिरिक्त जिला न्यायालय ने मंगलवार को उस याचिका पर अपने फैसले को 9 जून के लिये सुरक्षित रख दिया, जिसमें कुतुबमीनार कॉम्प्लेक्स के अन्दर के 27 हिन्दू तथा जैन मंदिरों को पुनः प्रतिष्ठापित करने की माँग की गई थी,

- ''पुराने अन्यायों से आज की शान्ति नहीं भंग की जा सकती।''

जबकि आर्कियोलॉजिकल सर्वे ऑफ इण्डिया (ए.एस.आई.) जो पुराने स्मारकों को संरक्षण प्रदान करता है, ने दृढ़तापूर्वक कहा कि यह पूजा स्थल नहीं है तथा मौजूदा संरचना में कोई भी परिवर्तन करने की अनुमति देय नहीं है।

जज निखिल चोपड़ा ने मंगलवार को जिरह पूरी हो जाने के बाद, सभी पक्षों को संक्षिप्त सार, अगर हो तो, प्रस्तुत करने की अनुमति दे दी। एक अपीलार्थी,

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)